5 जुलाई 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

जय दादाजी धाम

खंडवा स्थित श्री दादाजी धाम, आज सम्पूर्ण देश में श्रद्धा का केन्द्र है,
लाखों श्रद्धालु गुरुपूर्णिमा उत्सव के सुअवसर पर धाम पर दर्शन करने आते हैं,
सम्पूर्ण खंडवा नगर श्रद्धालुओं की सेवा में रत हो जाता है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल–दर–साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख–रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण–अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

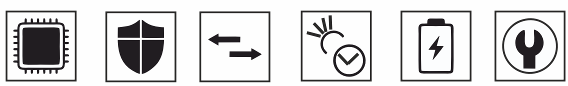

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

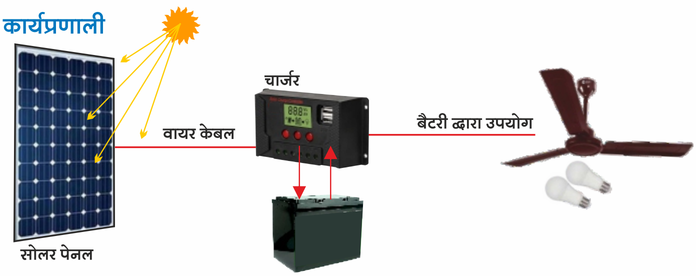

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला–धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई–मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 जुलाई 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 03 अंक : 01
...
सावन / कृष्ण
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
...
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
...
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

गुरू पूर्णिमा पर्व का भारतीय संस्कृति में अत्यन्त महत्व है। इसी दिन वेदों को चार भागों में विभाजित करने वाले तथा पुराणों की रचना करने वाले आदिगुरू वेदव्यासजी का जन्म हुआ था। जीवन में गुरू का अत्यन्त महत्व है। गुरू के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। भारत में गुरू पूजन की परम्परा अनादि काल से चली आ रही है।

अपने मालवा प्रान्त के निमाड़ क्षेत्र के खण्डवा नगर में धूनी वाले दादाजी का समाधि स्थल है। यह स्थान भक्तों की आस्था का मुख्य केन्द्र है। भारत के महान संतों में धूनी वाले दादाजी की गिनती की जाती है। विशेष रूप से गुरूपूर्णिमा के दिन उस स्थान पर देश भर से लाखों लोग दर्शन करने आते हैं। यहां दादाजी का मन्दिर तथा लगभग सौ वर्षों से अखण्ड धूनी जल रही है।

धूनी वाले दादाजी का असली नाम स्वामी केशवानंदजी महाराज था। वे प्रतिदिन पवित्र धूनी के सामने बैठकर ध्यान लगाते थे इसलिए लोग उन्हें धूनी वाले दादाजी के नाम से स्मरण करने लगे। भक्तगण उन्हें शिव का अवतार मानते हैं। वैसे तो दादा का दरबार देश के अनेक स्थानों पर है, लेकिन मुख्य दरबार खण्डवा में ही स्थित है। ऐसा बताते हैं कि इस पवित्र धूनी में दादाजी चने डालते थे और उनके चमत्कार से वो चने सोने और चांदी में बदल जाते थे। खण्डवा में उनका विश्व प्रसिद्ध दरबार चौदह एकड़ में फैला हुआ है। इस दरबार को उनके परम शिष्य हरिहरानंद ने बनवाया था। उन्हें लोग छोटे दादाजी के रूप में मानते हैं।

दादाजी धूनी वाले माँ नर्मदा के अनन्य भक्त थे वे नर्मदा के किनारे ही भम्रण कर साधना करते थे। दादाजी द्वारा प्रज्वलित धूनी में हवन सामग्री के अलावा नारियल प्रसाद सूखे मेवे सब कुछ स्वाहा कर दिया जाता है। संत की शक्ति इस धूनी में ही समाई हुई है। इसलिए धूनी की भभूत भक्तगण प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं।

मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के अनेक स्थानों से लोग निशान लेकर पैदल दादाजी के दरबार में पहुंचते हैं। हम सबके लिए परम सौभाग्य का विषय है कि धूनीवाले दादाजी का मुख्य दरबार अपने मालवा प्रान्त के खण्डवा नगर में स्थापित है। **दादाजी के चरणों में सादर नमन!**

धूनीवाले दादाजी महाराज

संकलन निलेश माऊलिकर

खंडवा की पहचान तीन दादाओं के नाम से होती है। जिसमें अवधूत संत दादाजी महाराज के साथ साहित्यकार माखन दादा चतुर्वेदी एवं विश्व के महान कलाकार किशोर दा है। वैसे तो खंडवा का प्राचीन इतिहास धार्मिक संस्कृति से जुड़ा हुआ है। पूर्व में खंडवा को खांडव वन के नाम से जाना जाता था। कहते हैं कि वनवास के समय भगवान श्रीराम खांडव वन आए थे और रामेश्वर आम्रकुंज में माता सीता को प्यास लगने पर भगवान श्रीराम ने तीर चलाकर जलधारा प्रवाहित की थी। अवधूत संत दादाजी महाराज साक्षात दादाजी धाम पर मौजूद हैं। दिनोंदिन दादाजी के प्रति भक्तिभाव भक्तों में लगातार बढ़ता जा रहा है। दादाजी धाम पर दो दिनों तक गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व एक भव्य मेले का रूप ले लेता है, जिसमें पूरे देश के साथ लाखों श्रद्धालु दादाजी धाम पहुंचकर दादाजी को नमन करते हैं एवं धूनी माई में परिवार एवं समाज के कल्याणार्थ आहुति भेंट करते हैं। दादाजी धूनीवाले या धूनीवाले दादाजी की गिनती भारत के महान संतों में की जाती है। दादाजी धूनीवाले का अपने भक्तों के बीच वही स्थान है जैसा कि शिर्डी के साई बाबा का। उनका समाधि स्थल खंडवा शहर में है। दादाजी स्वामी केशवानंदजी महाराज एक बहुत बड़े संत थे और लगातार घूमते रहते थे। प्रतिदिन दादाजी पवित्र अग्नि (धूनी) के समक्ष ध्यानमग्न होकर बैठे रहते थे, इसलिए लोग उन्हें दादाजी धूनीवाले के नाम से स्मरण करने लगे। दादाजी धूनीवाले को शिव का अवतार मानकर पूजा जाता है और कहा जाता है कि उनके दरबार में आने से बिन मांगी दुआएं भी पूरी हो जाती हैं।

दादाजी का जीवन वृत्तांत प्रामाणिक रूप से उपलब्ध नहीं है, परंतु उनकी महिमा का गुणगान करने वाली कई कथाएं प्रचलित हैं। दादाजी का दरबार उनके समाधि स्थल पर बनाया गया है। देश-विदेश में दादाजी के असंेय भक्त हैं। दादाजी के नाम पर भारत और विदेशों में सत्ताईस धाम मौजूद हैं। इन स्थानों पर दादाजी के समय से अब तक निरंतर धूनी जल रही है। मार्गशीर्ष माह में (मार्गशीर्ष सुदी 13) के दिन सन् 1930 में दादाजी ने खंडवा शहर में समाधि ली। यह समाधि रेलवे स्टेशन से 3 किमी की दूरी पर है। दादाजी का मुख्य समाधि स्थल खंडवा में है लेकिन कुछ ऐसे स्थान भी हैं, जहां दादाजी कुछ दिनों तक रहे थे। ऐसे स्थानों में से एक स्थान नर्मदा किनारे नावघाटखेड़ी में स्थापित है। 1973 में स्थापित इस स्थान को पादुका स्थली भी कहते हैं। 1930 में इंदौर से खंडवा आते समय दादाजी इसी स्थान पर चातुर्मास के लिए ठहरे थे। तभी से यहां दादाजी की चरण पादुकाएं स्थापित हैं। उनके भक्तों ने इस स्थान को पवित्रता के साथ सजाए रखा है।

मां नर्मदा के अनन्य भक्त थे बड़े दादाजी- केशवानंद जी महाराज बड़े दादाजी का प्रामाणिक जीवन वृतांत मौजूद नहीं है। कहा जाता है कि वे मां नर्मदा के भक्त थे। उनके गुरु गौरीशंकर महाराज थे। नर्मदा परिक्रमा करते हुए दादाजी खंडवा आए और यहीं के होकर रह गए। एक डंडा, चिमटा और कंबल हमेशा साथ रहता था। पवित्र अग्नि प्रज्वलित कर वे साधना व ध्यान करते थे। सन 1930 में वे समाधिलीन हो गए थे।

छोटे दादाजी को मिला हरिहर भोले का नाम - बड़े दादाजी केशवानंदजी के दर्शनों के लिए राजस्थान के डीडवाना से आए भंवरलाल इतने प्रभावित हुए कि स्वयं को दादाजी के चरणों में समर्पित कर दिया। दादाजी उन्हें हरिहर तथा सेवाभावी शिष्य उन्हें हरिहरानंद महाराज के नाम से पुकारते थे। बड़े दादाजी के उत्तराधिकारी के रूप में उन्होंने दादाजी आश्रम की बागडोर संभाली और आश्रम संचालन के नियम तय किए। इसके अनुसार ही आज भी सेवा और पूजन होता है। सन् 1942 में छोटे दादाजी ने संसार को त्याग दिया। उनकी समाधि भी गुरू बड़े दादाजी के समीप ही बनाई गई है।

धूनीवाले दादाजी महाराज को पकवान नहीं, टिक्कड़ था पसंद - अवधूत संत धूनीवाले दादाजी महाराज को गेहूं के आटे से बना टिक्कड़ पसंद था। इसीलिए केशवानंद जी महाराज (बड़े दादाजी) और हरिहर भोले सरकार (छोटे दादाजी) महाराज की समाधि पर प्रतिदिन टिक्कड़ की महाप्रसादी का भोग लगता है। दादाजी धाम दर्शनों के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को प्रसादी के रूप में टिक्कड़ ही दिया

जाता है। इसे पाकर श्रद्धालु स्वयं को धन्य समझता है। श्री धूनीवाले दादाजी ट्रस्ट और पटेल सेवा समिति के आश्रम में प्रतिदिन सौ से डेढ़ सौ किलो आटे की टिक्कड़ प्रसादी तैयार होती है। गुरुपूर्णिमा पर इसकी मात्रा दस गुना तक बढ़ जाती है।

खंडवा के दादाजी धाम की महाप्रसादी टिक्कड़ देश ही नहीं विदेशों में रहने वाले भक्तों के लिए छप्पन भोग से भी बढ़कर माना जाता है। इसे पाने के लिए यहां आने वाला भक्त हाथ पसारकर अगाध श्रद्धा से इसे ग्रहण करता है। टिक्कड़ को आज भी चूल्हे पर लकड़ी जलाकर सेवादारों द्वारा तैयार किया जाता है। रोटी के आकार के टिक्कड़ की मोटाई अधिक होने से इसकी सिकाई विशेष रूप से होती है। इसे लकड़ी आंच पर दोनों तरफ से फूलने पर ही पका हुआ माना जाता है।

30 साल पहले बजरंग दल ने की थी भंडारे की शुरुआत - दादाजी भक्त व गणेश गोशाला के सचिव रामचंद्र मौर्य ने बताया कि 1992 में जिले के 2300 कार्यकर्ता उज्जैन कुंभ मेले में गए थे। तब वहां श्रद्धालुओं को चाय, पोहे व प्रसादी भंडारे में दी जा रही थी। यहीं से प्रेरणा लेकर बजरंग दल ने पहला भंडारा दादाजी मंदिर के पास शुरू किया था। इसके पहले दर्शनार्थी को प्रसाद नहीं मिल पाता था। वे अपनी ट्रैक्टर ट्राली के नीचे ही चूल्हा जलाकर भोजन की व्यवस्था करते थे।

100 से ज्यादा भंडारे, सादा भोजन और पकवान - पर्व के दौरान शहर में एक से लेकर तीन दिन तक छोटे बे करीब 100 से अधिक भंडारे, 500 से अधिक चाय, पानी, पोहा, भजिया, जलेबी, मिठाई, काजू कतली, चाट, पानी पताशे सहित अन्य जलपान के स्टॉल लगाए जाते हैं। इनमें जेपीबी क्लब द्वारा महात्मा गांधी मार्ग, सराफा बाजार, घंटाघर, सिविल लाइन, कमल यूथ क्लब द्वारा भवानी माता मंदिर के पास आदि स्थानों पर बड़े आयोजन होते हैं।

हर कदम पर भंडारे, दो दिन बंद रहते हैं होटल-ढाबे - प्रदेश में खंडवा ही ऐसा शहर है, जहां गुरु पूर्णिमा पर्व पर दो दिनों तक लोगों के घरों में चूल्हे नहीं जलते। बाहर से आने वाले श्रद्धालु भी भंडारों में प्रसादी ग्रहण करते हैं। इस दौरान शहर ही नहीं जिले के सारे होटल-ढाबे बंद रहते हैं। कोई भी श्रद्धालु नाश्ते, चाय या भोजन पर खर्च नहीं करता।

ऑटो, कुली सेवा सब कुछ मुफ्त - ऑटो चालक मनीष शिंदे ने बताया कि उनके यूनियन के करीब एक दर्जन ऑटो चालक गुरु पूर्णिमा पर्व पर यात्रियों को मुफ्त सेवा देते हैं। रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड से दादाजी धाम तक छोड़कर निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं। सेवा का यही जज्बा इस साल भी अनवरत जारी रहेगा। इधर, रेलवे स्टेशन पर भी बाहर से आने वाले यात्रियों का सामान कुली मुफ्त में ढोते हैं।

दादानाम से गूंज उठता है शहर - गुरू पूर्णिमा पर्व के पूर्व से ही शहर में दादाजी नाम गूंजने लग गया है। दादाजी मंदिर में गुरू पूर्णिमा 2 जुलाई को मनाई जाएगी। वहीं कैलेंडर के अनुसार 3 जुलाई को होने से दो दिनों तक दादाजी दरबार में लाखों की संख्या में भक्त दर्शन करने पहुंचेंगे। गुरू पूर्णिमा होने से दादाजी दरबार में निशान चढ़ाने और दादाजी की सेवा, दर्शन के लिए सैकड़ों मील पैदल चलकर भक्तों का खंडवा पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया है। **भज लो दादाजी का नाम, भज लो हरिहरजी का नाम** की गूंज शहर में सुनाई देने लगी है। शहर सहित ग्रामीण क्षेत्रों से भक्त पैदल यात्रा कर निशान लेकर दादाजी धाम पहुंच रहे हैं। शहर में गुरू पूर्णिमा के साथ ही प्राचीन नाम सप्ताह उत्सव पर्व भी शुरू हो चुका है । दादाजी धाम पर पूर्णिमा को लेकर भक्तों के लिए वाटरप्रूफ टेंट की व्यवस्था की गई है जिससे भक्तों को पानी व धूप से बचाया जा सके। रंगरोगन के साथ मंदिर में अन्य तैयारियां भी की गई हैं। अलग-अलग लगभग 100 समितियों का निर्माण किया जाकर दादाजी भक्तों ने अपने कार्य की जिमेदारी संभाल ली है। गुरु पूर्णिमा के पूर्व शहर के अलग-अलग समाज निशान यात्रा लेकर दादाजी धाम पहुंचते हैं। गुरू पूर्णिमा का मुख्य दिवस 2 जुलाई को मनाया जाएगा। जिसमें प्रातः 4 बजे समाधि का नर्मदा व गंगा जल से अभिषेक, 5 बजे मंगल आरती, दोपहर 3 बजे समाधि पर मालिश व पंचामृत से अभिषेक एवं पर्व की महाआरती रात्रि 8 बजे 108 दीपों से की जाएगी। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी गुरू पूर्णिमा पर्व दादाजी धाम पर दो दिनों तक मनाया जाएगा। जहां दादाजी धाम में तैयारियां शुरू हो चुकी हैं, वहीं जिला प्रशासन भी इस पर्व की तैयारी में जुट गया है और साथ ही नगर निगम भी पूर्णिमा की तैयारी में सक्रिय है। इस वर्ष गुरू पूर्णिमा पर पांच लाख से भी अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि बैतूल, पांढुरना, नागपुर व अन्य स्थानों से दादाजी भक्त निशान एवं रथ लेकर एक माह पूर्व ही अपने शहरों से पैदल निकलते हैं और गुरू पूर्णिमा पर दादाजी धाम पहुंचते हैं।

भगवान महावीर का 2550 वां निर्वाण वर्ष

कमल जैन, दिल्ली

जैन का अर्थ - 'जैन धर्म' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। एक शब्द है 'जैन', दूसरा शब्द है 'धर्म'। जैसे शिव को मानने वाले शैव, विष्णु को मानने वाले वैष्णव, वैसे ही 'जिन' को अथवा 'जिन' के द्वारा उपदेशित धर्म को मानने वाले 'जैन' और उनका धर्म 'जैन धर्म' कहलाता हैं। 'जिन' का अर्थ है- जीतने वाला अर्थात विजेता। किसको जीतने वाला? इसका समाधान है - इंद्रियों को जीतने वाला- जितेंद्रिय अथवा स्वयं को जीतने वाला। इंद्रियों को जीतना अथवा स्वयं को जीतना- दोनों का अर्थ लगभग एक ही है। अर्थात् हमारा मन और इंद्रियाँ जो हर समय संसार के ऐशो-आराम, सुख, भोग-विलास, मनोरंजन आदि की ओर भागती हैं, उनको नियंत्रण में करना। उनकी प्रवृत्ति को बहिर्मुखी से अंतर्मुखी बनाना। स्वयं को जीतने का अर्थ है- अपने अंदर के काम-क्रोध, राग-द्वेष, विषय-विकार आदि दोषों पर विजय प्राप्त कर लेना। 'जिन' अथवा 'जिनेन्द्र भगवान' स्वयं विजय प्राप्त करने के साथ-साथ अन्य प्राणियों को भी अपने अंदर के दोषों और विकारों को दूर कर जिनत्व की प्राप्ति का मार्ग बताते हैं। उनके द्वारा उपदेशित इस मार्ग को एवं उनके द्वारा स्थापित धर्म-संघ को 'तीर्थ' कहते हैं। ऐसे तीर्थ की स्थापना करने के कारण वे 'तीर्थंकर' भी कहलाते हैं। संक्षेप में कहें तो जिन, जिनेन्द्र, तीर्थंकर लगभग एक ही बात है और यही जैन धर्म का ईश्वर या भगवान है।

भगवान महावीर जैन धर्म के 24 वें एवम् इस काल चक्र के अंतिम तीर्थंकर हैं - महावीर स्वामी का जन्म बिहार में पटना के उत्तर में स्थित वैशाली के कुंडग्राम में 599 ई.पूर्व में ज्ञातृ कुल में हुआ था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो उस क्षेत्र के राजा थे। माता का नाम त्रिशला देवी था जो लिच्छवी वंश के राजघराने से थीं। महावीर का बचपन का नाम वर्द्धमान था जो उन्हें उनके माता-पिता द्वारा दिया गया था। इनका एक अन्य नाम सन्मति भी प्राप्त होता है। इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम नन्दीवर्धन और बहन का नाम सुदर्शना था। जैनों के श्वेताम्बर सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार महावीर का विवाह भी हुआ था। इनकी पत्नी का नाम यशोदा और पुत्री का नाम प्रियदर्शना था।

महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण कर कठोर साधना की। इनकी इस कठोर साधना से प्रभावित होकर ही इनको महावीर नाम दिया गया। लगभग साढ़े बारह वर्ष की कठोर साधना और तपस्या के पश्चात् उनको सर्वशुद्ध, निर्मल एवं शाश्वत केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई और वह जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर के रूप में जाने गए। आगामी 30 वर्ष तक उन्होंने धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया। संसार के प्राणियों को इस आत्मा के साथ अनादि काल से लगे हुए दुख, जरा, जन्म-मरण आदि के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष के शाश्वत सुखों को प्राप्त करने का मार्ग बतलाया। लगभग 72 वर्ष की आयु में 527 ई.पूर्व में बिहार की पावापुरी से कार्तिक अमावस्या के दिन वह मोक्ष अथवा निर्वाण को प्राप्त हुए। जैन मान्यता के अनुसार उनके निर्वाण-दिवस से ही दीपावली पर्व का प्रारंभ हुआ। उनके निर्वाण के 2550 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस वर्ष सन् 2023 को भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

जैन धर्म की ऐतिहासिकता - जैन धर्म का मूल प्रागैतिहासिक काल का है अर्थात् जहाँ से इतिहास प्रारंभ हुआ उससे भी अति प्राचीन है। जैन धर्म में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ देव (आदिनाथ) से लेकर अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा मिलती है। अब यह निर्विवाद रूप से माना जा चुका है महावीर स्वामी से दो शताब्दी पूर्व अर्थात् ई.पू. आठवीं शताब्दी में होने वाले तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे। अतः उनके पश्चात होने वाले भगवान महावीर की ऐतिहासिकता स्वयं सिद्ध हो जाती है। मूल वेदों में, भागवत में तथा अन्य प्राचीन वैदिक साहित्य में जैन तीर्थंकरों, जैन मुनियों आदि का उल्लेख जैन परम्परा को प्राचीन सिद्ध करता है तथा इस धारणा का भी उन्मूलन करता है कि इसका जन्म एक सुधारवादी आन्दोलन के रूप में किसी अन्य परम्परा या धर्म से हुआ था।

भगवान महावीर के संदेश और उपदेशों के विषय में जानकारी आगामी अंक में दी जाएगी। -

इंटरसिटी वाले बाबा
गीताप्रेस के सबसे बड़े ब्रांड एम्बेसडर

अमन व्यास

इंदौर से भोपाल सुबह साढ़े 6 बजे इंटरसिटी ट्रेन जाती है, चूंकि गांव शुजालपुर के पास है तो सबसे अधिक यात्राएं इसी ट्रेन से हुई हैं।

पिछले लगभग बारह वर्ष से, जबसे इस ट्रेन में बैठना शुरू किया है, तबसे एक घटना सदैव घटती है। इंदौर स्टेशन से एक बाबा, जिनकी आयु 75 वर्ष या उससे अधिक है, वे एक 15-17 किलो वजनी झोला लेकर इंटरसिटी में चढ़ते हैं।

इस झोले में गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित अनेकों धार्मिक और संस्कारित करने वाली पुस्तक होती हैं। बाबा ट्रेन के चलने के कुछ देर बाद, एक-एक डब्बे में जाते हैं, किसी सीट पर सभी पुस्तकें रख देते हैं, जिस यात्री को जो पुस्तक देखना है, वह आराम से देखता है। फिर बाबा एक-एक पुस्तक का परिचय कराने लगते हैं, धर्म का सार बताने लगते हैं और जब देखते हैं कि युवा यात्री तो उनकी बात सुनने और पुस्तकों को देखने के बजाय कान में इयरफोन

डालकर मोबाइल चला रहे हैं तो वे अचानक **'फर्राटेदार अंग्रेजी'** में बोलने लगते हैं, मोबाइल के अधिक उपयोग के दुष्प्रभाव बताते हैं, वर्तमान की समस्याओं से अवगत कराते हैं और यह सब इतना सधा हुआ होता है कि सब उन्हे सुनने लगते हैं, पुस्तकें क्रय करने लगते हैं।

ऐसा नहीं है कि यह किताबें बेचना बाबा का व्यवसाय अथवा विवशता है। बाबा उच्च शिक्षित हैं। 1965 में भोपाल सचिवालय में नौकरी पर रहे, पूर्व श्रम मंत्री वीरेंद्र सिंह के निजी सहायक रहे हैं। नईदुनिया जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में कार्यरत रहे हैं, सिंहस्थ जैसे आयोजनों की टोलियों में रहें, आज बेटा भारतीय वायुसेना में है, आज घर पर वे सुख से रह सकते हैं, किंतु फिर भी समाज में धर्म और इतिहास का ज्ञान हो, नई पीढ़ी में संस्कार पल्लवित हों, इसलिए सन् 1994 से 2023 तक निर्बाध प्रतिदिन सुबह इंटरसिटी ट्रेन से इंदौर से शुजालपुर और फिर पंचवेली ट्रेन से शुजालपुर से इंदौर गीताप्रेस का साहित्य विक्रय करते हैं, उनकी महानता की जानकारी देते हैं और इसके लिए वे गीताप्रेस से भी किसी तरह का धन नहीं लेते और पुस्तकों को भी मूल्य से अधिक में विक्रय नहीं करते।

गीताप्रेस इस वर्ष, अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर रही है। उसे गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। शायद गीताप्रेस दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक प्रकाशन है, जिसने 14 भाषाओं में 40 करोड़ से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिसमे 15 करोड़ से अधिक तो गीताजी ही हैं, लेकिन जो प्रकाशन किसी तरह का विज्ञापन नहीं लेता, किसी जीवित की छवि नहीं लगाता है। जिसने अपने ब्रांड के प्रचार के लिए किसी बड़ी छवि को **हायर** नहीं किया है।

क्योंकि दीपेश्वर जी जैसे अनेकों भारतभक्त उनके ब्रांड एम्बेसडर हैं, जो भारत के सत्व **साहित्य** के प्रसार के अनथक श्रम कर रहे हैं, दीपेश्वर जी कहते हैं कि वे अभी तक एक करोड़ रुपए से अधिक का साहित्य रेलगाड़ी से बेच चुके हैं और देश में 14 हजार से अधिक रेलगाड़ियां हैं, मेरी तरह सेवानिवृत्त बन्धु, यदि ठान लें, तो हम देश की आने वाली पीढ़ी तक भारत का साहित्य धन पहुंचा सकेंगे, उन्हे पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकेंगे। आज गीताप्रेस को गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा हुई है, सोचा आज आपसे इस अनथक साधक की साधना को साझा किया जाए।

भारत के मिसाइल मैन - डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भारत के मिसाइल मैन डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम देश के करोड़ों युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं। उनके जीवन के कई ऐसे क्षण थे जिनसे बहुत से लोग अपने सपने को हासिल करने के लिए प्रेरित होते हैं। बिना मेहनत के कोई भी व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। डॉ. कलाम बचपन से ही दृढ़ संकल्पित थे। जब वे खराब परिस्थितियों के कारण समाचार पत्र बेचते थे, ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें पढ़ते भी थे।

उनके जीवन का यह क्षण कई ऐसे लोगों को प्रेरित करता है जो सोचते हैं कि पढ़ाई पैसे से ही होती है। अगर आपके पास नहीं है तो मुश्किल है लेकिन ए.पी.जे. कलाम के इस पल ने सिखाया कि दृढ़ संकल्प अधिक महत्वपूर्ण है।

ऐसी ही एक कहानी आई थी जब उनका कॉलेज खत्म हुआ था, कॉलेज खत्म होने के बाद जब कलाम जी ने इंडियन आर्म्ड फोर्सेज़ में फाइटर पाइलट की पोस्ट के लिए अप्लाई किया, उस समय वहां सिर्फ आठ सीट खाली थीं। यहां उनका 9वां नंबर आया और वह आर्म्ड फोर्सेस के लिए सेलेक्ट नहीं हो पाए। उसके बाद से उन्होंने डी.आर.डी.ओ. जॉइन की, लेकिन वह डी.आर.डी.ओ. में वह अपनी जॉब से खुश नहीं थे, क्योंकि उन्हें वहां कुछ नया सीखने नहीं मिलता था। तभी उनकी मुलाकात इसरो के फाउंडर विक्रम साराभाई जी से हुई। उन्हें अब्दुल कलाम जी की मेहनत और हर वक्त कुछ नया सीखने की चाह बहुत पसंद आयी। उसके बाद कलाम का ट्रांसफर डी.आर.डी.ओ. से इसरो में हुआ। आज भी लाखों लोग इस किस्से से कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित होते हैं। ए.पी.जे. कलाम के जीवन की एक ऐसी भी घटना थी जब एक बार एक व्यक्ति ने डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का स्कैच बना कर उन्हें भेजा। उन्हें यह जान कर बहुत आश्चर्य हुआ कि डॉ. कलाम ने खुद अपने हाथों से उनके लिए एक संदेश और अपना हस्ताक्षर करके एक थैंक यू कार्ड भेजा था।

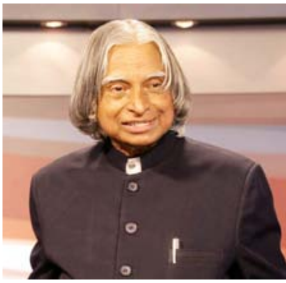

डॉ. कलाम हम सभी के लिए आदर्श हैं। उनका जीवन कठिनाईओं से भरा था, लेकिन कभी भी उन्होंने हार नहीं मानी। किसी भी व्यक्ति ने डॉ. कलाम को गुस्से में नहीं देखा और आज डॉ. कलाम विश्व में विनम्रता के सबसे बड़े उदाहरण हैं जिस से आज भी लाखों लोगों को प्रेरणा मिलती है। ए.पी.जे. कलाम जी की जिंदगी के कई ऐसे भी किस्से हैं जो हमें नेतृत्व, दान, विनम्रता, मान, जिससे लाखों लोग अपने सपनों को हासिल करने के लिए प्रेरित होते हैं।

गुरु पूर्णिमा (आषाढ़ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा)

गुरु पूर्णिमा का दिन सभी गुरुओं के प्रति कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करने के लिए सनातन हिन्दू परंपरा का एक पर्व है सभी सनातनी हिंदू इसे संसार भर में मनाते हैं। यह हिंदू पंचांग के आषाढ़ माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, जो अंग्रेजी वर्ष के जून से जुलाई में पड़ता है। इस दिन को उस अवसर के प्रतीक रूप में मनाया जाता है जब शिव जी ने अपने आदिगुरु स्वरूप में सप्तऋषियों को योग विद्या का ज्ञान देना आरंभ किया था। इसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि महाभारत के रचयिता और वेदों का संकलन करने वाले यह ऋषि वेद व्यास का जन्मदिन भी है। **गुरु पूर्णिमा** स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी और हिन्दू पुनर्जागरण के पुरोधा डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा 1925 ई में संस्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के उन छह प्रमुख त्यौहारों (वर्ष प्रतिपदा, विजयादशमी, मकर संक्रांति, हिंदू साम्राज्य दिवस, गुरु पूर्णिमा और रक्षा बंधन) में से एक है, जिन्हें संघ अपनी विभिन्न शाखाओं के माध्यम से आधिकारिक रूप से मनाता है।

इस दिन, प्रत्येक आरएसएस शाखा **गुरु दक्षिणा (गुरु को भेंट करना)** का आयोजन करती है। इस कार्यक्रम के आयोजन के मुख्य रूप से दो कारण हैं। पहला, भारत की **गुरु-शिष्य परंपरा** की सदियों पुरानी श्रद्धेय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाना और दूसरा, संगठन के कामकाज के लिए वित्त की व्यवस्था करना। आरएसएस के शुरुआती वर्षों में यह तय किया गया था कि संगठनात्मक कार्य के लिए, आरएसएस केवल स्वयंसेवकों से योगदान लेगा। इस प्रकार एक संगठनात्मक गतिविधि के रूप में **गुरु दक्षिणा** को इस तरह से तैयार किया गया था कि स्वयंसेवक, वैचारिक रूप से प्रशिक्षित होने के साथ-साथ वित्तीय योगदान भी करते हैं जिसका उपयोग संगठनात्मक कार्यों के लिए किया जाता है।

उधम सिंह

शेर सिंह 'उधम' बना, राम मोहम्मद सिंह आजाद,
अपनी जान गंवाकर, किया देश आजाद।।

क्रूरता और निर्दयता की प्रतिमूर्ति जलियांवाले बाग हत्याकांड को अंजाम देने वाले जनरल डायर से माकूल इंतकाम लेने वाले और लाखों निर्दोष, मजलूम लोगों के हृदय से रंजिश रूपी प्रतिनाद को सुनने वाले और उसको मुकम्मल सजा उसकी ही सरजमी पर देने वाले वीर पुत्र जिनका नाम सुनते ही भारतीय युवाओं के रगों में आज भी दानावल हो जाए, शौर्य ऐसा कि गाथा लिखें तो पन्ने ही कम पड़ जाए, साहस ऐसा कि बाहुबल भी शर्मा जाएं, नाम ऐसा कि संगठन की लहर चल जाए। हिन्दू, मुस्लिम, सिख और तमाम धर्मों से परे धर्मनिरपेक्षता का नाम जिनके ललाट पर शोभनीय है अर्थात राम मोहम्मद सिंह उर्फ उधम सिंह। पूरा नाम राम मोहम्मद सिंह आजाद, सारे धर्मों को अपने नाम में समेट लेने वाले, स्वतंत्रता संग्राम के जननायक वीर क्रांतिकारी, 'उधम सिंह' जिनका जन्म 28 दिसंबर 1899 को सुनाम पंजाब में हुआ इनके पिता का नाम तेहल सिंह और माँ का नाम नारायण कौर था। अपने पिता तहल सिंह की मृत्यु के बाद उधम सिंह और उनके बड़े भाई मुक्ता सिंह को अमृतसर के सेंट्रल खालसा अनाथालय ले जाया गया। उधम सिंह ने अपनी मैट्रिक की परीक्षा 1918 में पास की और सन् 1919 में अनाथालय छोड़ दिया। जब बाग में गोलियां चलाई गई जिसमें कि कई लोग मारे गए थे। उस समय उधम सिंह जलियांवाला बाग में भीड़ को पानी पिला रहे थे। उसके पश्चात चल रही क्रांतिकारी, राजनीति में उधम सिंह शामिल हो गए। उधम सिंह, भगत सिंह से बहुत ज्यादा ही प्रभावित थे। उधम सिंह गदर पार्टी में शामिल हुए थे और वह विदेशों में भारतीयों को इकट्ठा कर रहे थे। भगत सिंह के कहने पर 1927 में उधम सिंह अपने 25 साथियों के साथ गोला, बारूद, रिवाल्वर आदि लेकर भारत वापस आए। जैसे ही उधम सिंह वापस आए उन्हें बिना लाइसेंस के हथियार रखने पर गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर मुकदमा चला कर उधम सिंह को पांच वर्ष की जेल की सजा सुनाई गई।

जेल से 1931 में रिहा होने के बाद उधम सिंह पर लगातार पुलिस की नजर बनी हुई थी। और विदेश जाने के लिए बनने वाले पासपोर्ट के लिए ही उधम सिंह ने अपना शेर सिंह से नाम बदलकर उधम सिंह रखा था। उधम सिंह अपने लक्ष्य के साथ लंदन पहुंच गए। दो दशक तक उनके सीने में जलियांवाला बाग नरसंहार की आग धधकती रही। आखिर 13 मार्च 1940 का दिन आया।

लंदन के काक्स्टन हॉल में ईस्ट इंडियन एसोसिएशन की मीटिंग चल रही थी। उसी दौरान उधम सिंह ने ओ ड्वायर को मौत के घाट उतार दिया। उन्होंने कई गोलियां चलाई। भारत के ब्रिटिश सेक्रेटरी लॉर्ड जेटलैंड, बॉबे के पूर्व गवर्नर लॉर्ड लैमिंग्टन और पंजाब के पूर्व गवर्नर सर लुई डेन को भी गोलियां लगी। उधम सिंह को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया इस घटना ने ब्रिटेन में सनसनी फैला दी। अंग्रेज थर्रा उठे। ब्रिटिश अखबारों में इसकी सुर्खियां बनी। डेली मिरर ने लिखा, '20 साल बाद बदला, भुलाया नही गया था अमृतसर।' फ्रांस और जर्मनी तक इसकी गूंज पहुंची। तभी उन्हें हिरासत में ले लिया गया था, उधम सिंह का मुकदमा 04 जून 1940 को ओल्ड बेली के क्रिमिनल कोर्ट में जस्टिस एटिंसन के सामने शुरू हुआ।

उधम सिंह को जनरल डायर की हत्या का दोषी पाया गया और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। 31 जुलाई 1940 को उधम सिंह को अल्बर्ट पियरेपॉइंट द्वारा पेंटनविले जेल में फांसी दी गई थी। उधम सिंह के अवशेष पंजाब के अमृतसर में जलियांवाला बाग में संरक्षित हैं। प्रत्येक 31 जुलाई को विभिन्न संगठनों द्वारा सुनाम में मार्च निकाला जाता है और शहर में उधम सिंह की प्रत्येक प्रतिमा को फूलों की माला से श्रद्धांजलि दी जाती है। उनके बलिदान और साहस की गाथा सदैव स्मरणीय है।

भारत की स्वतन्त्रता के महानायक क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद

डॉ. रत्नदीप निगम

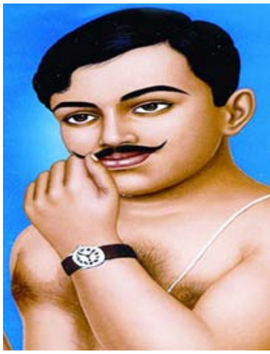

भारत की स्वतन्त्रता के महानायक एवम् प्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक ग्राम में हुआ था । एक स्वाभिमानी तथा संस्कारी परिवार में जन्म लेने वाले चंद्रशेखर आजाद युवावस्था में ही देश की स्वतंत्रता के आंदोलन में कूद गए थे । बनारस में एक संस्कृत कॉलेज में धरना देने के कारण उनको गिरफ्तार किया गया और जज के सामने प्रस्तुत किया तो उन्होंने अपने पिता का नाम स्वतंत्र, स्वयं का नाम आजाद और घर का पता जेल बताया । तब उन्हें 15 कोड़े मारने की सजा सुनाई गई। जब उनकी पीठ पर कोड़े मारे जा रहे थे तब वे वंदे मातरम और भारत माता की जय के नारे लगा रहे थे । उनके इस प्रदर्शन से वे देश के क्रांतिकारियों में लोकप्रिय हो गए थे । उन्होंने क्रांतिकारियों की हिंदुस्तान सोशलिस्ट पार्टी में सम्मिलित कर लिया । काकोरी में अंग्रेजों के खजाने को लूटने में रामप्रसाद बिस्मिल के मुख्य सहयोगी रहे । 1928 में लाला लाजपत राय की हत्या के दोषी लाहौर के पुलिस अधीक्षक सैंडर्स से बदला लेने के लिए भगतसिंह, राजगुरु के साथ चंद्रशेखर आजाद ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय घेर लिया और जैसे ही सैंडर्स ने मोटरसाइकिल स्टार्ट की , उसी समय राजगुरु ने सैंडर्स के सिर में गोली मार दी और उसके अंगरक्षक को चंद्रशेखर आजाद ने गोली मार दी ।

उनके इस साहसपूर्ण अभियान ने उनको जनता का नायक बना दिया । उनकी मान्यता थी कि अंग्रेज सरकार उनको कभी जीवित नहीं पकड़ सकती । इसी मान्यता को सिद्ध करते हुए 27 फरवरी सन 1931 में प्रयागराज के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज पुलिस द्वारा घेर लिए जाने पर उन्होंने स्वयं को ही गोली मार ली और देश के लिए अपना बलिदान दे दिया ।

शिवभक्तों के लिए खास हरियाली अमावस्या

गीतांजलि गोगटे

श्रावण मास में आने वाले प्रमुख त्यौहारों में से दो का महत्व सभी के जीवन में है। महिलाओं और सभी शिवभक्तों के लिए हरियाली अमावस्या विशेष महत्व रखती है। इसे बहुत शुभ माना जाता है। श्रावण में वर्षा के आगमन से सर्वत्र हरियाली छाई रहती है। मानवीय जीवन की मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए जाते हैं और उसी के माध्यम से समृद्धि की प्रार्थना की जाती रही है। इस दिन तुलसी, आंवला, बिल्व और केले के पौधे लगाए जाते हैं। यह दिवस रूद्राभिषेक के लिए भी खास है। हरियाली अमावस्या के दिवस स्नान और दान का अपना महत्व है। मालवा और निमाड़ में मां नर्मदा का अपना अलग स्थान है। इस पूरे क्षेत्र की जीवनदात्री मां नर्मदा की गोद में देशभर के लोग अपने मन की इच्छा को लेकर स्नान के लिए आते हैं। वैसे हरियाली अमावस्या पूरे देशभर में मनाई जाती है। हरियाली अमावस्या के बाद आती है हरियाली तीज। भगवान शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप की पूजा करने से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। यह दिन पितरों के तर्पण तथा श्राद्ध के लिए भी उत्तम माना जाता है। इस दिन पीपल और तुलसी की पूजा करने का भी विधान है। ऐसे ही दान में मालपुए का दान उत्तम माना जाता है। यह दिवस हम सभी हिन्दुओं के लिए सशक्त धार्मिक मूल्यों को समाहित किए हुए हैं। रीति रिवाजों के मामले में देशभर की भौगोलिक स्थितियों और साधनों की उपलब्धता के आधार पर अंतर है, परंतु धर्म के मामले में पूरे देश में हरियाली अमावस्या के दिन पूरे देश भर के मंदिरों में अपने-अपने आराध्यों के दर्शनों के लिए भीड़ उमड़ी रहती है। चंद्रमा के ना दिखने से बुरी शक्तिओं का संजाल फैला रहता है इस कारण पूरे दिन धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों से ईश्वर की सहायता मांगी जाती है। और इसी का परिणाम होता है कि बुरी ताकतों से हम बचे रहते हैं। यह दिन अध्यात्म की दृष्टि से भी बहुत अधिक महत्व का है।

बोध कथा

जो बोएगा, वही पाएगा

एक गांव का किसान जो दूध से दही और मक्खन बनाकर बेचा करता था, एक दिन उसकी पत्नी ने उसे मक्खन तैयार करके दिया। वह उसे बेचने शहर गया। वह मक्खन गोल पेड़े की शक्ल में था तथा हर पेड़े का वजन 1 किलो था। शहर में किसान ने उस मक्खन को हमेशा की तरह एक दुकानदार को बेच दिया और दुकानदार से चाय, चीनी, तेल, साबुन वगैरह खरीदकर अपने गांव चला गया। किसान के जाने के बाद दुकानदार ने एक पेड़े का वजन किया तो पेड़ा 900 ग्राम का निकला फिर तो उस दुकानदार ने हर पेड़े का वजन किया परंतु सभी 900 ग्राम के निकले। अगले हफ्ते किसान फिर से हमेशा की तरह मक्खन लेकर दुकानदार के पास पहुँचा। तो दुकानदार ने चिल्लाते हुए किसान से कहा चले जाओ, किसी बेईमान और धोखेबाज व्यक्ति से मुझे करोबार नहीं करना। मैं 900 ग्राम मक्खन को 1 किलो बताकर बेचने वाले व्यक्ति की शक्ल भी नहीं देखना चाहता। तब किसान बड़ी विनम्रता से बोला भाई हम तो गरीब लोग हैं हमारे पास माल तौलने के लिए बांट (वजन) नही है। मैं तो आपसे जो 1 किलो चीनी लेकर जाता हूं। उसी को तराजू के एक पलड़े में रखकर दूसरे पलड़े में उतने ही वजन का मक्खन तोल कर लें आता हूं। और वही आपको देता हूँ। तो भला धोखेबाज और बेईमान कौन है। भाइयों हम दूसरों को देंगे जो वही लौटकर आएगा चाहे वह, इज्जत हो, सम्मान हो या चाहे धोखा हो।

सावण आयो

डॉ. शशि निगम

बादळ उमड़ी-घुमड़ी रिया हे
बीजळी नगाड़ा बजावे हे
सतरंगी इन्द्र धनुष तण्यो हे
मोर होण नाच बतावे हे
के सावण आयो रे...

बादळा अमृत बरसावे हे
धरती फूली नी समावे हे
के बायरो, गीत सुणावे हे
झाड़ ना ताळी बजावे हे
के सावण आयो रे...

धरती हरी-भरी हुईंगी,
सबका हिरदे खुसी छईंगी
मादळ पे गो भजन मंडली,
छोरा-छोरी नाचे दई ताळी
के सावण आयो रे...

सखी ना बाग-बगीचा जाय,
वाँ से फूल पाती लई आय
सगळी गीत मिळी ने गाय,
झूला के ऊँचों-ऊँचों चढ़ाय
के सावण आयो रे...

छमा-छम बरसे इन्दर राय,
गोरी का मुखड़े लट बिखराय
लटाँ से बूंदा झर-झर जाय,
गोरी को हियो घणो धड़काय
के सावण आयो रे...

टाटा और स्वामीजी

डॉ. लखन रघुवंशी

स्वामी विवेकानंद एक बार जहाज से जापान से अमेरिका की यात्रा कर रहे थे। जहाज पर उद्योगपति जमशेदजी टाटा भी थे। स्वामी जी ने टाटा से अमेरिका जाने का कारण पूछा। उन्होनें कहा कि मैं भारत में इस्पात का कारखाना लगाना चाहता हूं। उन्होंने शुभकामनाओं के साथ एक बात कही। उन्होंने कहा कि विदेश से तकनीक लेकर काम करना अच्छा है। परंतु उसका लाभ तब तक नहीं होगा जब तक कि आप अपने देशवासियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं लाएंगे। उनका कहना था समाज नामक संस्था को धर्म और विज्ञान का बराबर साथ चाहिए। तभी संतुलित विकास संभव है। उनकी इस चर्चा से जमशेदजी पर गहरा असर पड़ा। बहुत सालों बाद जब टाटा को पता चला कि स्वामीजी रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर रहे हैं तब उन्होंने स्वामीजी को एक पत्र लिखा।

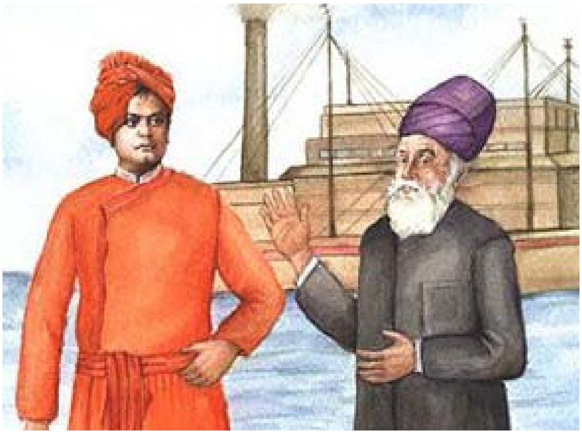

प्रिय स्वामी विवेकानन्द ।

मैं विश्वास करता हूं कि आपको याद होगा जापान से शिकागो तक की समुद्र यात्रा में मैं भी आपके साथ सहयात्री था। आपने भारत में संन्यास भावना की वृध्दि पर जो विचार प्रस्तुत किये थे कि उसका नाश नहीं बल्कि उसे उपयोगी दिशा में मोड़ देना है। उसकी इस समय मुझे बहुत याद आ रही है। भारत के लिए मेरी रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस ; वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान की योजना है। आपकी कही बातों का ख्याल मुझे उसके संदर्भ में आ रहा है। आपने भी मेरी इस योजना के बारे में पढ़ा या सुना होगा। मुझे ऐसा लगता है कि संन्यास भावना का इससे अच्छा उपयोग और नहीं हो सकता कि इस भावना से अनुप्राणित लोगों के लिए मठ या आवास कक्ष बना दिये जायें। जहां पर वे आवश्यक सुविधाओं के साथ शालीनतापूर्वक रह सकें और अपना जीवन भौतिक तथा मानवतावादी विज्ञानों के अभिवर्धन हेतु खपा सकें। मेरा मत है कि यदि एक सुयोग्य नेता के द्वारा इस प्रकार की संन्यास भावना के पक्ष में जिहाद छेड़ दिया जाए तो उससे संन्यास भावना विज्ञान और हमारी इस मातृभूमि के यश को बड़ी मदद मिलेगी। मुझे पता नहीं कि विवेकानंद को छोड़ इस अभियान के नेतृत्व के लिए और कौन बेहतर नाम हो सकता है। अपनी प्राचीन वैज्ञानिक परम्पराओं को संजीवित करने के लिए इस अभियान को समय देना क्या आपके लिए संभव हो पाएगा। लोगों को इस संबंध में जागरूक करने के लिए शायद एक जोशीले प्रचार-पत्र के प्रकाशन से काम शुरू करना आपके लिए बेहतर होगा। इस प्रकाशन का सारा खर्च वहन करने में मुझे प्रसन्नता होगी।

सद्भावनाओं के साथ -

23 नवम्बर 1898

एस्प्लनेड हाउस, बम्बई

आपका विश्वासपात्र - **जमशेद जी टाटा**

बाद में चलकर इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ साइंस के नाम से टाटाजी का संस्थान बेंगलोर में स्थापित हुआ। उसकी स्थापना में स्वामीजी का बहुत बड़ा योगदान था।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

पोषण युक्त-विषमुक्त खेती के लिए किसानों को कर रहे प्रेरित

राजगढ़ क्षेत्र में भूमि सुपोषण संरक्षण अभियान के तहत राजगढ़ खंड के ग्राम विकास गतिविधि के कार्यकर्ताओं की टोली ने किसानों को पोषण युक्त और विषमुक्त खेती के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से धरती माता पूजन कार्यक्रम का आयोजन कृषि उपज मंडी में किया।

गोमाता एवं भारत माता, भगवान बलराम के चित्र पर पूजन अर्चन व दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि संत अवधूत नर्मदानंद एवं विशेष अतिथि झालावाड़ के हुकुमचंद पाटीदार थे। स्वागत उमाकांत पाटीदार, प्रभुलाल सोलंकी, गोवर्धन पटेल ने किया। अतिथि परिचय गौरीशंकर पाटीदार ने दिया। प्रस्तावना रखते हुए खंड के ग्राम विकास संयोजक पेमालाल पडियार कहा कि इस धरती माता पूजन उत्सव के माध्यम से किसानों को अपनी खेती बचाने के लिए विष मुक्त- पोषण युक्त खेती लिए प्रेरित कर रहे हैं।

65 गांवों में होगी बैठक - क्षेत्र के 65 से अधिक गांव में किसानों की बैठक कर 1500 से अधिक किसानों से संपर्क कर 800 किसान परिवारों का सशुल्क पंजीयन किया गया। इसमें प्रथम चरण में पूजन सामग्री देकर अपने अपने खेतों से की मिट्टी को निमंत्रित कर लाने का आह्वान किया। दूसरे चरण में 4 जून को धरती माता पूजन उत्सव में उस मिट्टी को किसान आज यहां पर लेकर आए हैं। इस मिट्टी का यहां पर सप्त नदियों के जल एवं पवित्र सप्त स्थानों की रज से अभिषेक एवं पूजन कर अपने घरों पर ले जाएंगे। तीसरे चरण में इस पूजित मिट्टी को किसान अपने खेतों में विसर्जित कर धरती माता के साथ श्रद्धा और अपनत्व के भाव से जुड़ेंगे।

गो और भारत माता का महत्व बताया - मुख्य अतिथि संत अवधूत नर्मदानंद ने सनातन संस्कृति में धरती माता, गोमाता और भारत माता के महत्व को बताकर किसानों का भाव, श्रद्धा जागरण किया। विशेष अतिथि जैविक कृषि के विशेषज्ञ पद्मश्री हुकमचंद पाटीदार ने किसानों को अपनी खेती के बंजर होने वाले खतरों तथा इससे खेती को बचाने तथा सुरक्षित रखने तथा बीज सुरक्षित एवं फसल उत्पाद बढ़ाने की जानकारी दी।

ग्राम विकास गतिविधि के प्रांत सहसंयोजक महेंद्र पाटीदार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संघचालक भूपेंद्र कसेरा, ग्राम विकास के विभाग संयोजक महेश राठौड़ सहित कार्यकर्ता उपस्थित थे । कृषि विभाग ने किसानों से मिट्टी परीक्षण के लिए 800 नमूने एकत्रित किए।

बीज वितरित किए - एक पेड़ देश के नाम अभियान में 10-10 बीज के पैकेट किसानों को वितरित कर पौधे के रूप में तैयार कर अगले वर्ष अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर मंदिर में मूर्ति स्थापना के शुभ दिन अपने खेतों पर लगाने का आह्वान किया।

भूमि संरक्षण का संकल्प दिलाया - रिंगनोद के पं. पंडित गिरिराज व्यास ने किसानों द्वारा प्रथम चरण में खेतों से निमंत्रित कर लाई गई मिट्टी का सप्त नदियों के जल एवं पवित्र शब्द स्थानों की रज से भूमिसूक्त के मंत्रों से अभिषेक एवं पूजन कर धरती माता एवं भारत माता की आरती के साथ संपन्न करवाया। इस मिट्टी को तीसरे चरण में अपने-अपने खेतों में विसर्जित करने का संकल्प दिलाया। जयराम पाटीदार ने भूमि सुपोषण एवं संरक्षण के लिए सभी उपस्थित किसानों को संकल्प दिलाया।

विजय दिवस

कर्नल मनोज बर्मन (से.नि)

युद्ध की शुरूआत -

1. 1947 के बाद पाकिस्तान निरंतर भारत की ओर आक्रमक तथा द्वेष पूर्ण कार्यवाही करता रहा। 1948, 1965, 1971 के युद्ध इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इन सभी युद्धों में हार होने के कारण पाकिस्तान ने नीति बदलकर छद्म युद्ध के रूप में कारगिल युद्ध किया।

2. वैसे तो पाकिस्तान ने इस युद्ध की शुरूआत 3 मई 1999 को ही कर दी थी जब उसने कारगिल की ऊँची पहाड़ियों पर 5000 सैनिकों के साथ घुसपैठ कर कब्जा जमा लिया था। इस बात की जानकारी गुर्जरों के माध्यम से जब भारत सरकार को मिली तो सेना ने पाक सैनिकों को खदेड़ने के लिए ऑपरेशन विजय चलाया। प्राप्त जानकारी के अनुसार तत्कालीन आर्मी चीफ जनरल परवेज मुर्शरफ ने स्वयं की देखरेख में इसकी प्लानिंग की।

घटनाक्रम -

❖ **3 मई 1999 :** एक चारवाहे ने भारतीय सेना को कारगिल में पाकिस्तान सेना के घुसपैठ कर कब्जा जमा लेने की सूचना दी।

❖ **5 मईः** भारतीय सेना की पेट्रोलिंग टीम जानकारी लेने कारगिल पहुँची तो पाकिस्तानी सेना ने उन्हें पकड़ लिया और उनमें से 5 की हत्या कर दी।

❖ **9 मई :** पाकिस्तानियों की गोलाबारी से भारतीय सेना का कारगिल में मौजूद गोला बारूद का स्टोर नष्ट हो गया।

❖ **10 मई :** पहली बार लदाख के प्रवेश द्वार यानी द्रास, काकसार और मुश्कोह सेक्टर में पाकिस्तानी घुसपैठियों को देखा गया।

❖ **26 मई :** भारतीय वायुसेना को कार्यवाही के लिए आदेश दिया गया।

❖ **27 मई :** कार्यवाही में भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग-27 और मिग-29 का भी इस्तेमाल किया।

❖ **26 जुलाई :** कारगिल युद्ध आधिकारिक तौर पर समाप्त हो गया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी घुसपैठियों के पूर्ण निष्कासन की घोषणा की।

इस युद्ध में बोफोर्स गन का प्रयोग बहुत निर्णायक परिणाम देने में सहयोगी रहा। साथ ही आर्मी एयरफोर्स का तालमेल भी इस युद्ध में हाई पॉईट रहा। चूंकि शत्रु ने ऊंचाई पर कब्जा किया हुआ था। अतः अपने सैनिक निरन्तर उनके लाईन ऑफ फेयर में रहते थे, इस कारण काफी संख्या में भारतीय सैनिक हताहत हुए।

❖ **कारगिल युद्ध,** जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान के बीच मई और जुलाई 1999 के बीच कश्मीर के कारगिल जिले में हुए सशस्त्र संघर्ष का नाम है। पाकिस्तान की सेना और कश्मीरी उग्रवादियों ने भारत और पाकिस्तान के बीच की नियंत्रण रेखा पार करके भारत की जमीन पर कब्जा करने की कोशिश की। पाकिस्तान ने दावा किया कि लड़ने वाले सभी कश्मीरी उग्रवादी हैं, लेकिन युद्ध में बरामद हुए दस्तावेजों और पाकिस्तानी नेताओं के बयानों से साबित हुआ कि पाकिस्तान की सेना प्रत्यक्ष रूप में इस युद्ध में शामिल थी। लगभग 30,000 भारतीय सैनिक और करीब 5000 घुसपैठिए इस युद्ध में शामिल थे। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्जे वाली जगहों पर हमला किया और धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमा पार वापस जाने को मजबूर किया। यह युद्ध ऊँचाई वाले इलाके पर हुआ और दोनों देशों की सेनाओं को लड़ने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। परमाणु बम बनाने के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ यह पहला सशस्त्र संघर्ष था। भारत ने कारगिल युद्ध जीता।

युद्ध में भारतीय सेना के 527 जवान शहीद हुए। बहुत सैनिकों को अदम्य साहस का परिचय देने के कारण वीरता पुरस्कार मिले जिसमें **वीरता का सर्वोच्च पुरस्कार परम वीर चक्र, कैप्टन विक्रम बतरा को (मरणोपरांत) एवं कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव, परमवीर चक्र पाने वाले देश के सबसे युवा सैनिक है।**

❖ **परिणाम द्रास स्थित कारगिल युद्ध स्मृति -** पाकिस्तान में इस युद्ध के कारण राजनैतिक और आर्थिक अस्थिरता बढ़ गई और नवाज शरीफ की सरकार को हटाकर परवेज मुर्शरफ राष्ट्रपति बन गए। दूसरी ओर भारत में इस युद्ध के दौरान देशप्रेम का उबाल देखने को मिला और भारत की अर्थव्यवस्था को काफी मजबूती मिली। भारतीय सरकार ने रक्षा बजट और बढ़ाया। इस युद्ध से प्रेरणा लेकर कई फिल्में बनी जिनमें **एल ओ सी कारगिल, लक्ष्य** और **धूप** मुख्य हैं। **जय हिन्द**

बढ़ती जनसंख्या और घटता जीवन स्तर

वेदिका सावल

जनसंख्या प्रकृति से जुड़ी एक ऐसी समस्या है जो दुनिया भर में उतनी ही ज्यादा मायने रख रही है जितनी अन्य समस्या में गंभीरता से लेना चाहिए। जनसंख्या नियंत्रण करने की आवश्यकता होती है क्योंकि जनसंख्या को संतुलित रख कर दुनिया के विकास के मुद्दों का समाधान किया जा सकेगा। भारत की जनसंख्या एक समस्या बन गई है । साल 2019 में जनसंख्या विनियमन विधेयक लाया गया था, जिसके तहत दो से ज्यादा बच्चे पैदा करने पर सजा और सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित करने का प्रस्ताव रखा गया था। 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने भाषण में जनसंख्या विस्फोट शब्द का उपयोग किया।

संयुक्त राष्ट्र की तरफ से जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत की कुल जनसंख्या 142.86 करोड़ पहुंच गई है, जबकि चीन की कुल जनसंख्या 142.57 करोड़ है। यानी चीन के मुकाबले भारत में करीब 30 लाख लोग ज्यादा हो गए हैं। अब आबादी के मामले में भारत के नंबर-1 पायदान पर पहुंचने की खूब चर्चा हो रही है, इसी बीच कुछ लोग जनसंख्या नियंत्रण कानून की बात भी छेड़ने लगे हैं। आने वाले कुछ दिनों में ये एक बड़ा मुद्दा बन सकता है। जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू करना क्यों मुश्किल? जनसंख्या नियंत्रण कानून को लेकर तमाम अल्पसंख्यक समुदाय लगातार मुखर रहे हैं। खासतौर पर मुस्लिम नेताओं का कहना है कि ये कानून नहीं बनाया जाना चाहिए। वहीं संविधान के जानकारों का मानना है कि जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून की बजाय अलग-अलग तरह से लोगों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। लोगों को बैंक लोन, ब्याज, रोजगार जैसी अलग-अलग चीजों में राहत देकर इसे ठीक किया जा सकता है।

जनसंख्या नियंत्रण कानून को लागू करने के खतरों की बात करें तो इससे असुरक्षित गर्भपात के मामलों में भारी उछाल आ सकता है। क्योंकि देश में कई हिस्से ऐसे हैं, जहां गर्भनिरोधक सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं, ऐसे में सजा से बचने के लिए महिलाओं को जबरन गर्भपात कराया जा सकता है। असुरक्षित गर्भपात से महिलाओं की जान को खतरा पैदा हो सकता है। इसी तरह के कुछ और खतरे भी हैं, जिन्हें कानून बनाने से पहले देखना और समझना जरूरी होगा। जनसंख्या नियंत्रण पर कानून बनाने या इसका जब भी जिक्र होता है, तब हिंदू-मुस्लिम बहस छिड़ जाती है। कुछ मुस्लिम नेताओं का कहना है कि जनसंख्या नियंत्रण कानून मुस्लिम विरोधी है। उनका आरोप है कि इस कानून को मुसलमानों को टारगेट करने के लिए लाया जाएगा। हालांकि ऐसा नहीं है, मुस्लिम समुदाय के अलावा देश में कई अल्पसंख्यक समुदाय रहते हैं, जिन पर जनसंख्या नियंत्रण कानून का असर ज्यादा हो सकता है। क्योंकि उनकी जनसंख्या वृद्धि दर काफी कम है और इसमें लगातार कमी भी आती जा रही है। इनमें पारसी, बौद्ध, जैन, ईसाई और ऐसे ही कुछ और समाज के लोग शामिल हैं।

नवंबर 2022 के मध्य तक दुनिया की आबादी आठ अरब तक पहुंचना अनुमानित है। इस अनुमान के अनुसार 2030 तक आबादी लगभग 8.5 अरब और 2050 तक 9.7 अरब हो जाएगी। 2080 तक इसके लगभग 10.4 अरब के शिखर तक पहुंचने का अनुमान है। जनसंख्या नियंत्रण कानून बनने के बाद बहुत सारे परिवर्तन हो सकते हैं। जनसंख्या नियंत्रण कानून को लेकर के बहुत सारे विमर्श हैं। सबसे पहले है अपने देश का मानव संसाधन, मानव संसाधन का मूल्य और मानव संसाधन की विश्व में उपलब्धता। इसके बाद प्रश्न आता है धर्म आधारित समाज में जनसंख्या नियंत्रण कानून का किस प्रकार क्रियान्वयन संभव हो पाएगा। आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों में जनसंख्या नियंत्रण के कारण जन जीवन स्तर में वृद्धि होती है या उनका जीवन स्तर और खराब हो जाता है।

सबसे घातक और महत्वपूर्ण परिणाम जो है वह है धर्म आधारित उपयोग जब जनसंख्या नियंत्रण कानून की बात करते हैं तो अब विभिन्न धर्म से अपने-अपने रूप में उपयोग करते हैं जबकि मानव संसाधन को जब हम देश के रूप में समग्र देखते हैं तो उसकी उपयोगिता देश के लिए उसी प्रकार रहेगी कि वह उत्पादक बना रहे। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान में यदि जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू कर दिया जाता है तो फिर हमारे बीच में जो नई पीढ़ी है उनकी संतान उत्पत्ति नहीं होगी और आने वाले समय में पूरा देश बुजुर्गों का देश रहेगा तो इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर समाधान करने के बाद ही हम जनसंख्या नियंत्रण कानून के बारे में विचार कर पाएंगे। परंतु यदि प्राकृतिक आपदाओं की बात करते हैं, घटते हुए जीवन स्तर की बात करते हैं तो हमें बढ़ती हुई जनसंख्या के ऊपर विचार करना बहुत अनिवार्य है क्योंकि देश में हमारे जितना देश में संसाधनों का की उपलब्धता है उन संसाधनों की उपलब्धता और साधनों से ज्यादा हमारे पास उपभोक्ता हैं।

कोई 100 करोड़ कमाने के लिए फिल्म बनाता है पर मैं 100 करोड़ को जगाने के लिए फिल्म बनाता हूँ – सुदीप्तो सेन (केरल स्टोरी के निर्देशक)

देश में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सुनियोजित तरीके से एक वामपंथी विचारधारा कार्य करती है जो यह समझती है कि आम जनता को वो जैसा बताऐंगे वही मान्य हो जाएगा। भारतीय सिनेमा को संभवतः इसीलिए बॉलीवुड के नाम से चलाया भी जाता है।

केरल स्टोरी के बाद मुझे समझ में आया कि फिल्में वास्तव में समाज परिवर्तन का प्रभावी माध्यम हैं। केरल स्टोरी बनाने के बाद से ही जब अनेक कानूनी व आर्थिक समस्याएं सामने आई तो भय था कि फिल्म रिलीज भी हो पाएगी कि नहीं, पर इसके रिलीज होने के दो माह में ही जैसा प्रतिसाद समाज की ओर से आया तो विश्वास हो कि देश में एक बड़ा परिवर्तन आ रहा है।

उपरोक्त बातें केरल स्टोरी के निर्देशक सुदीप्तो सेन ने इंदौर में डॉ हेडगेवार स्मारक समिति के वार्षिक व्याख्यान कार्यक्रम में **समाज परिवर्तन में सिने जगत की भूमिका** विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान देते हुए कही। श्री सेन ने आगे कहा कि इस फिल्म को कुछ लोगों ने प्रोपोगेण्डा कहकर दुष्प्रचारित किया, वहीं असल में यह फिल्म केरल में हाउसफुल रही है, हैदराबाद में इसने 23 करोड़ की कमाई की है और बिहार में लोगों ने इसे बेहद पसंद किया है। आज इस विषय पर समाज में खुलकर चर्चा होने लगी है। जिन 3.5 करो लोगों ने यह फिल्म देखी है, वे ही इस विमर्श को बाकी समाज तक लेकर जा रहे हैं।

अब एक वर्ग विशेष कंटेंट पर कंट्रोल नही रखेगा, समाज अपना एजेंडा खुद तय करेगा। भारत में आगे जो फिल्म बनेगी उन पर समाज की सोच दृष्टिगत होगी, कोई भी एक विशेष विचारधारा अब काम नहीं करेगी।विषय प्रस्तावना रखते हुए श्री विनय पिंगले ने कहा आज समाज के महत्वपूर्ण मुद्दे नई फिल्मों के माध्यम से सार्थक हो रहे हैं और समाज को सही दिशा दिखा रहे हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शहर के प्रख्यात फिल्म निर्माता देवेन्द्र मालवीय ने कहा कि मैं सुदीप्तो सेन जी को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अफगानिस्तान और सीरिया के मरुस्थल में दफन भारत की बेटियों की व्यथा समाज के सम्मुख प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में डेली कालेज प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष विक्रमसिंह पंवार की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन श्री अभिराम भिसे ने किया तथा आभार श्री सुजीत सिंहल ने व्यक्त किया। एकल गीत सुश्री तान्या पहाड़े ने लिया। कार्यक्रम का समापन सुश्री शालिनी गुप्ता के द्वारा वन्देमातरम् से हुआ।

सम्राट झाड़ू निकालते....

महाप्रभु जगन्नाथ, भैया बलभद्र और बहिन सुभद्रा की रथयात्रा पुरी में प्रारंभ हुई। इसी यात्रा के प्रारंभ में एक अनोखी परंपरा का निर्वाह भी हुआ, पुरी के राजपरिवार के वंशज श्री श्री गजपति महाराज ने स्वर्ण की झाडू से मंडप की झाडू निकाली।

जगन्नाथ रथयात्रा की अनेकों परंपराओं में से एक यह परंपरा देखने में मनभावन तो लगती ही है पर इसका विमर्श भी बहुत बड़ा है, भगवान के द्वार पर सम्राट और सामान्य जन में कोई भेद नहीं है। यात्रा में लाखों श्रद्धालु आते हैं, रथ खींचते हैं, जातियों का गणित शून्य होता है, समरसता का अमृत छलकता है।

हमारे संतों ने, सम्राटों ने, पुरखों ने समाज में अद्भुत परंपराओं को आक्रांताओं के आगमन से पूर्व ही रोपित कर दिया था ताकि जब आक्रांता छुआछूत, सती प्रथा, बाल विवाह और महिला अपमान के झूठ फैलाएं तो यह उत्सव -परंपराएं उन्हें मौन होकर सटीक उत्तर दे सकें।

सेवा भारती की मातृछाया का प्रशिक्षण वर्ग इंदौर में आयोजित

राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा देशभर में संचालित प्रकल्प **मातृछाया**(शिशुगृह) के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण वर्ग इंदौर में दिनाक 10-11 जून 2023 को आयोजित हुआ। मातृछाया (शिशु गृह) के माध्यम से 0-6 वर्ष के नवजात, निराश्रित, परित्यक्त, अनाथ, शिशुओं का पालन पोषण कर उन्हें निःसंतान दम्पतियों को कानूनी प्रक्रियाओं के माध्यम से गोद दिया जाता है।

इस कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग में पूरे देश की मातृछाया शिशुगृहों से 14 प्रांत के- 80 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए हैं। इस कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता श्री विजय जी पुराणिक (महामंत्री राष्ट्रीय सेवा भारती) द्वारा बताया गया कि इस कार्यकर्ता प्रशिक्षण के द्वारा सभी मातृछाया, शिशुगृहों का संकलन समन्वय और बच्चों के कल्याण के क्षेत्र में बेस्ट प्रक्टिस को विकसित करना है। आगे उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति की संकल्पना से विकसित हुआ नाम **मातृछाया** है।

मातृछाया (शिशुगृहों) में भारतीय संस्कृति के अनुसार शिशुगृहों का आयु अनुसार संस्कारों की अभिपूर्ति की जाती है।

गीता प्रेस, गोरखपुर को वर्ष 2021 का गांधी शांति पुरस्कार

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में निर्णायक मंडल ने 18 जून, 2023 को विचार-विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से वर्ष 2021 के गांधी शांति पुरस्कार के लिए गीता प्रेस, गोरखपुर का चयन किया। यह पुरस्कार गीता प्रेस, गोरखपुर को अहिंसक और अन्य गांधीवादी आदर्शों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जा रहा है।

वर्ष 1923 में स्थापित गीता प्रेस विश्व में सबसे बड़े प्रकाशकों में से एक है। इसने 14 भाषाओं में 41.7 करोड़ पुस्तकों का प्रकाशन किया है, जिनमें 16.21 करोड़ श्रीमद्भगवद् गीता (पुस्तकें) शामिल हैं। संस्था ने राजस्व सृजन के लिए कभी भी अपने प्रकाशनों के लिए विज्ञापन नहीं लिए। गीता प्रेस अपने संबद्ध संगठनों के साथ जीवन के उत्तरोत्तर विकास और सर्वजन-कल्याण के लिए प्रयासरत है।

प्रधानमंत्री ने शांति और सामाजिक सद्भाव के गांधीवादी आदर्शों को बढ़ावा देने में गीता प्रेस के योगदान का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि गीता प्रेस को अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने पर गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया जाना संस्थान द्वारा सामुदायिक सेवा में किए कार्यो की सराहना करना है।

झाबुआ के 120 गांवों के 15,284 लोगो ने लिया नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण का लाभ। सेवाभारती एवं NMO संगठन के माध्यम से गांव-गांव में लगे शिविर।

300 डॉक्टरों की टीम ने 120 गांवों में जाकर दी नि:शुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं। मेघनगर, झाबुआ :- सेवा भारती एवं नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन मालवा प्रांत के द्वारा 300 डॉक्टरों की टीम ने झाबुआ जिले के मेघनगर एव थांदला तहसील के 120 गांवों में जाकर लोगों को नि:शुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं दीं। इस कार्यक्रम का नाम टंट्या भील स्वास्थ्य सेवा यात्रा रखा गया। यह कार्यक्रम दो दिन तक रहा। डॉक्टरों के समूह दो दिन जनजाति गांवों में ही रुके। प्रयागराज, वाराणसी, अलीगढ़, दाहोद, भोपाल, इंदौर, रतलाम, दतिया, रीवा आदि जगहों के डॉक्टरों ने झाबुआ के इन गांवों में दो दिन रुककर स्वास्थ्य कैंप लगाया। **इस कार्यक्रम से 15 हजार 284 लोग लाभान्वित हुए।** कैंप में दवाइयां भी वितरित की गई। महिलाओं को डॉक्टरों के समूह ने गांव में रुककर घर-घर संपर्क किया। कार्यक्रम का समापन मेघनगर में हुआ। समापन कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रांत प्रचारक राजमोहनजी ने कहा कि जनजाति गांवों में निः स्वार्थ भाव से सेवा देने के लिए देश के अलग-अलग जगह से डॉक्टर अपना कीमती समय निकल कर आए और सेवा भारती और एनएमओ संगठन का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा एवं राष्ट्र सेवा है। समापन कार्यक्रम में एनएमओ संगठन के सदस्यों ने जनजाति गांव के रुकने के अनुभव भी साझा किए।

देवास के सोनकच्छ में मुस्लिम समाज द्वारा इस्लामिक निर्माण के लिये की जा रही खुदाई के दौरान एक बड़ा सा पत्थर जमीन से निकला।

यह पत्थर लगभग 4 फीट का है, जिस पर प्राचीन भाषा में कुछ लिखा हुआ है, यह वास्तविकता में शिलालेख है। इसके पुरातात्विक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए प्रशासन ने इसे जब्त कर लिया है एवं उसे पुरातत्व विभाग को सौंपने की बात कही है।

हिंदुओं ने इस इस्लामिक निर्माण के विरोध में 29 मई को तहसीलदार को ज्ञापन दिया था, कहा जा रहा है कि सर्व हिंदू समाज ने उक्त स्थान को हिंदू महत्व का बताकर इस्लामिक निर्माण रोकने का आग्रह किया था। अब शिलालेख के निकलने से वह दावा और अधिक पुष्ट हो रहा है।

महानाट्य का मंचन.... हिन्दवी स्वराज की स्थापना के 350 वर्ष पूर्ण होने पर हुआ आयोजन, कलाकारों ने दी उम्दा प्रस्तुति

श्री छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक होते ही गूंज उठा जयघोष

देवास/श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक अर्थात् हिंदवी स्वराज की स्थापना के 350 वर्ष पूर्ण होने पर हिंदवी स्वराज समारोह समिति एवं संस्कार भारती के संयुक्त प्रयास से मुखर्जी नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में महानाट्य का मंचन किया गया। महानाट्य में श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक व उनके जीवन प्रसंगों पर आधारित जीवंत प्रस्तुति दी गई। 70 से अधिक कलाकारों ने 2500 वर्गफीट के मंच पर श्री शिवाजी महाराज के जीवन प्रसंगों की उत्तम प्रस्तुति दी।

जीवंत चित्रण देख मंत्रमुग्ध हुए दर्शक - श्री छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक के प्रसंग का प्रभावी संवाद, गीत व नृत्य के साथ जीवंत चित्रण किया गया, जिसे देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए।देवास में श्री शिवाजी महाराज के महानाट्य के आयोजन का यह पहला अवसर था।जिसे उपस्थित सभी लोगों ने सराहा और आयोजन समिति की प्रशंसा की। यह मंचन हिन्दवी स्वराज समारोह समिति एवं संस्कार भारती के मार्गदर्शन में हुआ।

चंद्रशेखर आजाद जन्मस्थली भाबरा

अगस्त माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 01 बाल गंगाधर तिलक पुण्यतिथि
ता. 04 गणेश चतुर्थी व्रत
ता. 11 खुदीराम बोस शहीद दिवस
ता. 12 अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस
ता. 14 अखण्ड भारत संकल्प दिवस
ता. 15 स्वतंत्रता दिवस
ता. 30 रक्षाबंधन

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341